किलोल

मुख्य संपादक - डा. आलोक शुक्ला

संपादक - डा. एम. सुधीश

प्यारे दोस्तों,

सभी बच्चों को प्यार। किलोल का पहला अंक आपके हाथों में देकर आज मुझे बेहद खुशी हो रही है। आशा है आपको पसंद आयेगा। मेरा यह मानना है कि मेरे नन्हे साथी बेहद रचनात्मक हैं। उन्हें तलाश है केवल अभिव्यक्ति के अवसर की। 'किलोल' को आपके चुटकुलों, लेखों, कहानियों पहेलियों, चित्रों आदि का इंतज़ार है। अपनी रचनायें आप हमें ई-मेल व्दारा dr.alokshukla@gmail.com पर भेज सकते हैं। यह बाल पत्रिका मैंने अपने स्वयं के संसाधनों से प्रारंभ की है। मैने इसे एक ई-पत्रिका के रूप में प्रारंभ किया है। इंटरनेट पर पत्रिका का प्रत्येक अंक मुफ्त डाउनलोड के लिये उपलब्ध रहेगा। आप चाहें तो पत्रिका को डाउनलोड करके मुद्रित कर सकते हैं और अपने स्कूल के बच्चों को पढ़ने के लिये दे सकते हैं। इसके लिये आप पत्रिका को पी.डी.एफ. के रूप में डाउनलोड करें। मोबाइल पर पढ़ने के लिये आप इसे ई-पब फाइल के रूप में भी डाउनलोड कर सकते हैं और किसी भी मुफ्त ई-रीडर से अपने मोबाइल पर स्वयं भी पढ़ सकते हैं और बच्चों को भी मोबाइल पर पढ़ने के लिये दे सकते हैं।

आलोक शुक्ला

आओ हंस लें

बच्चा–मम्मी क्या मैं भगवान की तरह दिखता हूं?
मम्मी–नहीं, पर तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो बेटा
बच्चा–क्योंकि मम्मा मैं कहीं भी जाता हूं तो सब यही कहते हैं कि हे भगवान फिर आ गया

एक पहलवान बच्चे ने एक कमजोर बच्चे को थप्पड़ मारा।
कमजोर बच्चे ने पूछा–
यह थप्पड़ गुस्से से मारा है या मजाक में?
पहलवान बच्चे ने कहा–
गुस्से से मारा है।
कमजोर बच्चा बोला–
फिर ठीक है, मजाक मुझे बिल्कुल पंसद नहीं है।

एक आदमी ने एक बच्ची से पूछा–
तुम्हारे बाल बहुत सुंदर हैं, तुम्हे यह मम्मी से मिले हैं या पापा से?
बच्ची ने कहा–
मेरा ख्याल है पापा से, क्योंकि उन्हीं के सर के सारे बाल गायब हैं।

पिता ने पुत्र से कहा–
जब मैं तुम्हारी उम्र का था तो कभी झूठ नहीं बोलता था
पुत्र–
कृपया बताइए कि जब आपने झूठ बोलना शुरु किया, तब आपकी उम्र क्या थी ?

एक बच्चा रो रहा था उसके ***पिता ने रोने का कारण पूछा*** ***बच्चा बोला***–
दस रुपये दो, तब बताऊंगा
पिता ने बेटे को दस रुपये दे दिए और कहा–
अब बताओ बेटे!
तुम क्यों रो रहे थे ?
बच्चा बोला–
मैं तो दस रुपये के लिए ही रो रहा था

कला

चलो हाथी बनायें

1

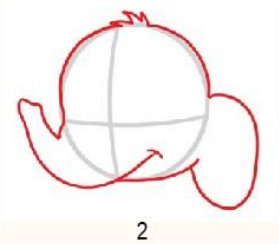

2

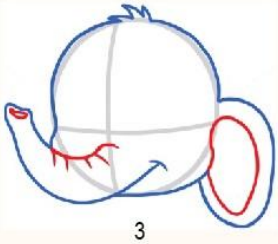

3

4

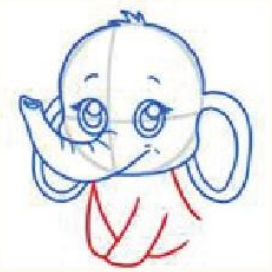

5

6

7

8

कर के देखें

परछाई से खेलो

घर में या बाहर कोई ऐसी दीवार ढूंढो जिसमें अच्छी परछाई बन सकती हो चित्र में दिखाए अनुसार अपने हाथ को रखते हुए दीवार पर परछाई बनाने का प्रयास करें दिए गए दोनों आकृतियों के अनुसार परछाई बन जाने पर अपनी कल्पना से और भी आकृतियाँ बनाने का प्रयास करें और हमसे साझा करें।

चित्र देखो और अपनी कहानी लिखो

इस चित्र को देखकर आपको कोई कहानी समझ में आ रही हो तो बस तुरंत एक कहानी पहले मन में सोच लो। जब आपको लगे कि वाह मैंने भी क्या कहानी सोची है तो फिर लिखना शुरू करें कहानी लिखकर हमें अवश्य भेजो।

सामान्य ज्ञान

प्राचीन भारतीय करेंसी सिस्टम

फूटी कौड़ी से कौड़ी
कौड़ी से दमड़ी
दमड़ी से ढेला
ढेला से पाई
पाई से पैसा
पैसा से रुपया

256 दमड़ी = 192 पाई= 128 ढेला = 64 पैसा= 16 आन्ना= 1 रुपया

अब आपको कुछ पुराने मुहावरों को और बेहतर तरीके से
समझने का मौका मिलेगा

कुछ उदाहरण–

एक फूटी कौड़ी नहीं दूंगा।
आजकल के बच्चे ढेले का काम भी नहीं करते।
चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।
पाई पाई का हिसाब रखना।

क्या आपको इनसे जुड़े कोई और मुहावरे याद हैं ?

बूझो तो जाने

1. जब भी लिखना होता किसी को,
   मैं बनती हूँ उनकी सखी सहेली द्यजब भी कोई मुझको काटे भाई,
   मैं हो जाती हूँ नई–नवेली।।

2. अगर तुम मुझे अपने नाक पर चढा दो द्य
   मैं तुम्हारे कान पकड़कर तुम्हीं को पढ़ा दूं।।

3. ना मारा ना खून किया।।
   बीसों का सर काट दिया द्यद्य

4. एक जानवर ऐसा।।
   जिसकी दुम पर पैसा द्यद्य

5. बिना बुलाए मैं आ जाऊं, हर जगह मैं पाई जाऊं।।
   मुझे पकड़ नहीं पाओगे पर मेरे बिन तुम रह नहीं पाओगे।।

उत्तर – 1. पेंसिल, 2. चश्मा, 3. नाखून, 4. मेंढक, 5. परछाईं

बालगीत

मछली जल की रानी है

मछली जल की रानी है
जीवन उसका पानी है
हाथ लगाओ तो डर जायेगी
बाहर निकालो तो मर जायेगी

Jack & Jill

Went up the hill
To fetch a pail of water
Jack fell down
And broke his crown
And Jill came tumbling after

बूझो तो जाने

राकेट बनाना

आपने आकाश में राकेट को तेज गति से ऊपर की ओर जाते हुए देखा होगा क्या आपको पता है कि राकेट कैसे उड़ता है ? चलिए राकेट जैसा ही कुछ हम भी बनाकर देखें इसके लिए आपको कुछ सामान लाना होगा एक लंबा धागा, एक गुब्बारा, प्लास्टिक का पाइप या खाली रिफिल, चिपकाने के लिए टेप आदि लंबे धागे को दो खंबे या किसी वस्तु से बाँध लें गुब्बारे के ऊपर एक स्ट्रा या पाइप चिपका लेवें अब इस गुब्बारे को फुलाकर धागे को रिफिल या स्ट्रा में से गुजारे ऐसी स्थिति में गुब्बारे को फुलाकर छोड़ने पर वह रस्सी पर तेजी से दौड़ेगा ।।

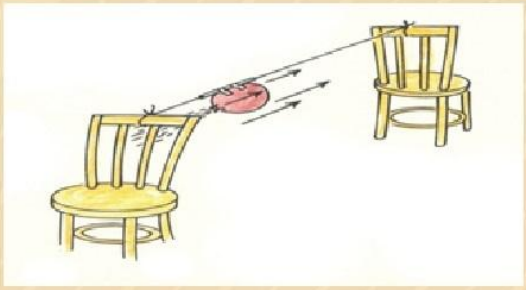

अब सोचें कि ऐसा क्यों होता है ?

इन बातों को अपने साथियों के साथ स्वयं करके महसूस करें एवं नतीजों पर पहुंचें.

- बडे एवं छोटे गुब्बारे से यह खेल खेलने से क्या अंतर आएगा?
- लंबे एवं गोल गुब्बारे से क्या अंतर आएगा?
- यदि रस्सी सीधी न होकर ऊपर या नीचे की ओर झुकी हो तो क्या अंतर आएगा?
- गुब्बारे में कम हवा हो तो क्या अंतर आएगा?
- क्या रस्सी के अलग–अलग प्रकार के होने पर भी अंतर आएगा?

ऐसे ही कुछ खेल जो आपको मालूम हो और आप स्वयं खेल चुके हों तो अवश्य हमें लिख भेजें। हम उसे अपने आगामी अंकों में स्थान देने का प्रयास करेंगे।

वर्ग पहेली

छत्तीसगढ़ के पड़ोसी राज्यों के नाम भरो

ते				■	■	■
■	■	■	■	■	■	■
■	■	■	म			ष्ट्र
■	■	झा		■	■	■
उ			प्र		श	■
	■			■	■	■
	■			■	■	■

पंचतंत्र

छत्तीसगढ़ के पड़ोसी राज्यों के नाम भरो

एक शेर अपनी गुफा में सो रहा था। एक चुल. बुला चूहा खेलते हुए वहां आया और शेर के ऊपर कूदने लगा। शेर ने उसे गुस्से से अपने पंजों में पकड़ लिया और गुर्राकर बोला – 'मैं तुझे मार डालूंगा'। चूहा डर के मारे कांपने लगा और हाथ जोड़कर बोला – 'मुझे माफ कर दीजिये महाराज। आपका बड़ा उपकार होगा। मैं कभी न कभी आपके काम आऊंगा'। शेर को उसपर दया आ गई। उसने चूहे को छोड़ दिया और हंस कर बोला – 'छोटा सा चूहा मेरे किस काम आयेगा। जा भाग जा। आगे से मुझे परेशान मत करना'।

कुछ समय बाद एक शिकारी जंगल में आया। शेर उसके बिछाये जाल में फंस गया। शेर सहायता के लिये जोर से दहाड़ मार कर चिल्लाने लगा।शेर की दहाड़ सुनकर चूहा वहां आया। चूहे ने अपने मित्रों के साथ मिलकर

जाल काट दिया और शेर को आजाद कर दिया। उस दिन शेर को समझ में आया कि छोटा–बड़ा कोई नहीं होता। किसी पर उपकार करने का परिणाम हमेशा अच्छा होता है। समय आने पर कोई छोटा भी बड़े की सहायता कर सकता है।